I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की बदलती भूमिका

अनिल कुमार [1*], डॉ. महेंद्र सिंह [2]

[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, एन.आई.आई.एल.एम विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा, भारत

[2] पर्यवेक्षक राजनीति विज्ञान विभाग, एन.आई.आई.एल.एम विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा भारत

Corresponding Author: * अनिल कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21440478

सारांश

गुटनिरपेक्षता भारत की स्वतंत्रता के बाद स्थापित की गई एक महत्वपूर्ण विदेश नीति थी, जिसका उद्देश्य देश को वैश्विक शीत युद्ध के दो प्रमुख गुटों से दूर रखना था। यह नीति भारत के लिए राष्ट्रीय संप्रभुता, स्वतंत्र निर्णय क्षमता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की गारंटी थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में गुटनिरपेक्षता ने भारत को वैश्विक मंच पर एक स्वतंत्र और सम्मानित राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। हालांकि, वैश्विक राजनीति में समय के साथ आए बदलावों और विशेषकर शीत युद्ध के बाद के एकध्रुवीय विश्व में इस नीति की भूमिका में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण और बदलती वैश्विक सुरक्षा चुनौतियों ने भारत को गुटनिरपेक्षता की परंपरागत अवधारणा से हटकर अधिक व्यावहारिक और रणनीतिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित किया। वर्तमान में भारत बहुध्रुवीय विश्व में सक्रिय भूमिका निभा रहा है, जहां वह सामरिक गठबंधनों और आर्थिक साझेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखता है। नरेंद्र मोदी सरकार के कार्यकाल में गुटनिरपेक्षता की नीति ने नई दिशा पाई है, जिसमें स्वतंत्र निर्णय की क्षमता बनाए रखते हुए वैश्विक गठबंधनों में सक्रिय भागीदारी शामिल है। इस शोधपत्र में भारत की गुटनिरपेक्षता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शीत युद्ध के दौरान इसकी भूमिका, शीत युद्ध के बाद के बदलाव, और 21वीं सदी में इसकी प्रासंगिकता पर गहन विश्लेषण किया गया है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-06-2026
- **Accepted:** 13-07-2026
- **Published:** 19-07-2026
- **IJCRM:**5(4); 2026: 299-302
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमार अ, सिंह म. भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की बदलती भूमिका. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(4):299-302.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: गुटनिरपेक्षता,भारत की विदेश नीति,शीत युद्ध,बहुध्रुवीय विश्व,वैश्वीकरण

© 2026 अनिल कुमार, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

गुटनिरपेक्षता विदेश नीति का एक ऐसा रुख है जिसमें कोई देश किसी भी सैन्य या राजनीतिक गुट में शामिल होने से बचता है और अपनी विदेश नीति से जुड़े फैसले स्वतंत्र रूप से लेता है। आज़ादी मिलने के बाद से ही भारत ने गुटनिरपेक्षता को अपनी विदेश नीति का मुख्य आधार बनाया है। यह नीति भारत की संप्रभुता की रक्षा करती है और वैश्विक राजनीति में उसे एक सम्मानित और प्रभावशाली देश के तौर पर स्थापित करती है। इस नीति के तहत, भारत ने शीत युद्ध के दौरान किसी भी महाशक्ति गुट के साथ जुड़ने से परहेज किया और अपने हितों के आधार पर फैसले लिए। इस नज़रिए ने भारत को वैश्विक मंच पर एक स्वतंत्र और निष्पक्ष भूमिका निभाने में मदद की। समय के साथ, बदलती वैश्विक राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार भारत की गुटनिरपेक्ष विदेश नीति में भी बदलाव आए हैं। वर्तमान में, गुटनिरपेक्षता के मूल सिद्धांतों को बनाए रखते हुए, भारत अपनी आर्थिक और सुरक्षा रणनीतियों में लचीलेपन और बहुपक्षीय सहयोग पर ज़्यादा ज़ोर देता है। यह शोध भारत की गुटनिरपेक्ष विदेश नीति के ऐतिहासिक विकास, इसके बदलते स्वरूप और आज के वैश्विक संदर्भ में इसके महत्व का विश्लेषण करता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

आज़ादी के बाद, भारत ने वैश्विक राजनीति में अपनी एक सक्रिय भूमिका बनाई और अपने विदेश संबंधों को स्वतंत्रता और संप्रभुता के सिद्धांतों पर आधारित किया। स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 'गुटनिरपेक्षता' (Non-Alignment) को देश की विदेश नीति का मुख्य आधार बनाया। उस समय, शीत युद्ध (Cold War) के प्रभाव में वैश्विक राजनीति दो बड़े गुटों में बंटी हुई थी: अमेरिका के नेतृत्व वाला पश्चिमी गुट और सोवियत संघ के नेतृत्व वाला पूर्वी गुट। ऐसे माहौल में, भारत ने एक स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई और किसी भी सैन्य या राजनीतिक गठबंधन में शामिल होने से साफ इनकार कर दिया। नेहरू का मानना था कि बाहरी ताकतों के दबाव में आने के बजाय, भारत को अपनी संप्रभुता की रक्षा करते हुए अपने हितों के आधार पर फैसले लेने चाहिए। इस दृष्टिकोण ने भारत को वैश्विक राजनीति में एक स्वतंत्र और निष्पक्ष भूमिका निभाने में सक्षम बनाया। 1955 के बांडुंग सम्मेलन (Bandung Conference) में, जिसमें एशिया और अफ्रीका के कई देशों ने भाग लिया, गुटनिरपेक्षता की नींव और मजबूत हुई। इसके बाद, 1961 में गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement) की स्थापना ने भारत के रुख को वैश्विक मान्यता दिलाई और अन्य विकासशील देशों के लिए एक बेहतरीन उदाहरण पेश किया। गुटनिरपेक्षता की इस नीति के तहत, भारत ने शांति, सहयोग और विकास के सिद्धांतों को अपनाया और साथ ही विभिन्न अंतरराष्ट्रीय विवादों में एक निष्पक्ष मध्यस्थ की भूमिका निभाई। भारत का यह दृष्टिकोण दुनिया भर के नव-स्वतंत्र देशों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना। समय के साथ, बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुसार भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति में बदलाव आए हैं, फिर भी इसका मुख्य उद्देश्य एक स्वतंत्र और संतुलित विदेश नीति बनाए रखना ही रहा है।

भारत की गुटनिरपेक्ष नीति की अवधारणा और सिद्धांत

भारत की गुटनिरपेक्ष नीति का अवधारणा:

भारत की गुटनिरपेक्ष नीति का मतलब था कि देश किसी भी सैन्य या राजनीतिक गुट का हिस्सा नहीं बनेगा और अपनी विदेश नीति के बारे में स्वतंत्र और स्वायत्त फैसले लेगा। यह नीति वैश्विक संतुलन बनाए रखने, संप्रभुता की रक्षा करने और विकासशील देशों के हितों को प्राथमिकता देने पर केंद्रित थी। भारत ने शीत युद्ध के दौरान अमेरिका और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले दो बड़े गुटों से दूरी बनाए रखने के लिए यह तरीका अपनाया। इसका मकसद ऐसी विदेश नीति बनाना था जो भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय को प्राथमिकता दे।

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व:

शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व भारत की गुटनिरपेक्ष नीति का एक बुनियादी सिद्धांत है, जिसका अर्थ है कि अलग-अलग देश बिना किसी टकराव के एक-दूसरे के साथ रह सकते हैं। यह सिद्धांत सभी देशों की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान को बनाए रखता है। इस सिद्धांत को अपनाकर, भारत ने वैश्विक शांति और स्थिरता बनाए रखने की कोशिश की। इस नीति के तहत, भारत ने किसी भी सैन्य संघर्ष में शामिल होने से बचते हुए बातचीत और कूटनीति के ज़रिए विवादों को सुलझाने पर ज़ोर दिया।

राष्ट्रीय संप्रभुता और स्वराज (स्व-शासन):

राष्ट्रीय संप्रभुता और (स्वराज) (स्व-शासन) का सम्मान गुटनिरपेक्षता का एक मुख्य सिद्धांत था। भारत ने यह सुनिश्चित किया कि उसकी विदेश नीति बाहरी दबाव या दखल से मुक्त रहे। यह सिद्धांत भारत की घरेलू और बाहरी दोनों नीतियों में स्वतंत्रता और स्वायत्तता की रक्षा करता है। भारत के लिए यह ज़रूरी था कि वह किसी बाहरी ताकत के प्रभाव में आए बिना अपने फैसले खुद ले। इस सिद्धांत ने भारत को वैश्विक मंच पर एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर देश के रूप में स्थापित किया।

आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय:

भारत की गुटनिरपेक्ष नीति केवल राजनीतिक और सैन्य स्वतंत्रता तक ही सीमित नहीं थी; इसमें आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय भी शामिल थे। यह नीति विकासशील देशों के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और सामाजिक सद्भाव को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित थी। भारत ने वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में समानता और न्याय की वकालत की और विकासशील देशों के हितों की रक्षा के लिए बहुपक्षीय मंचों का इस्तेमाल किया। यह सिद्धांत भारत की विदेश नीति को समावेशी और न्यायपूर्ण दिशा में ले जाता है।

शीत युद्ध के दौरान गुटनिरपेक्षता की भूमिका:

शीत युद्ध के दौर में, वैश्विक राजनीति दो बड़े गुटों में बंटी हुई थी: पश्चिमी गुट (जिसका नेतृत्व अमेरिका कर रहा था) और पूर्वी गुट (जिसका नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था)। इस तनावपूर्ण माहौल में, भारत ने 'गुटनिरपेक्षता' की नीति अपनाकर दोनों गुटों से दूरी बनाए रखी। हालांकि, व्यावहारिक रूप से भारत ने अपनी सुरक्षा और रणनीतिक ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए सोवियत संघ के साथ

© 2026 अनिल कुमार, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मज़बूत संबंध बनाए। 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान, भारत को सोवियत संघ से राजनीतिक समर्थन मिला, जबकि अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों ने इस संघर्ष में कम सक्रिय भूमिका निभाई। 1971 के बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान भी भारत की गुटनिरपेक्षता की नीति ने अहम भूमिका निभाई। सोवियत संघ के साथ सैन्य और कूटनीतिक सहयोग बढ़ाकर, भारत ने पाकिस्तान और उसका समर्थन करने वालों के ख़िलाफ़ अपने हितों की रक्षा की। इसके बावजूद, वैश्विक रणनीतिक संतुलन बनाए रखने के लिए भारत ने अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ भी संबंध बनाए रखे। इस तरह, भारत ने दोनों गुटों के बीच अपनी स्थिति को सफलतापूर्वक संतुलित किया, जो उसकी गुटनिरपेक्षता नीति की कामयाबी का सबूत है।

शीत युद्ध के बाद विदेश नीति में बदलाव

शीत युद्ध के खत्म होने के साथ ही वैश्विक राजनीति में एकध्रुवीयता (Unipolarity) का दौर शुरू हुआ, जिसमें अमेरिका का दबदबा बढ़ा। भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई और वैश्वीकरण की ओर कदम बढ़ाया। इस नए माहौल में, भारत की गुटनिरपेक्षता (Non-Alignment) की नीति में बदलाव आया और इसे नए आयाम और अधिक लचीलापन मिला। भारत ने अमेरिका, रूस और चीन जैसे देशों के साथ गहरे रणनीतिक संबंध बनाए और साथ ही वैश्विक आर्थिक और सुरक्षा मंचों में अपनी सक्रिय भागीदारी बढ़ाई।

21वीं सदी में गुटनिरपेक्षता की बदलती भूमिका

आज की बहुध्रुवीय दुनिया में, भारत की रणनीति बदलती परिस्थितियों के अनुसार अधिक व्यावहारिक और अनुकूल हो गई है। भारत QUAD, BRICS और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) जैसे अंतरराष्ट्रीय समूहों में सक्रिय भूमिका निभाता है। इसने अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ रणनीतिक सहयोग को भी मजबूत किया है। इस नई भूमिका में, भारत गुटनिरपेक्षता की पारंपरिक अवधारणा से आगे बढ़कर एक ऐसी विदेश नीति अपना रहा है जो सक्रिय और स्वतंत्र, दोनों है।

भारत की वर्तमान विदेश नीति और गुटनिरपेक्षता का स्वरूप

स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता बनाए रखना

नरेंद्र मोदी सरकार के तहत, भारत ने अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति में स्वतंत्रता बनाए रखी है, जिससे वह अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार अपनी विदेश नीति तय करने के लिए स्वतंत्र है। भारत न केवल पारंपरिक गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों का पालन करता है, बल्कि वैश्विक और क्षेत्रीय चुनौतियों के हिसाब से रणनीतियां भी बनाता है। स्वतंत्र निर्णय लेने की यह क्षमता भारत को एक अधिक आत्मनिर्भर और प्रभावशाली वैश्विक खिलाड़ी के रूप में स्थापित करती है।

रणनीतिक साझेदारियों का विस्तार

भारत ने अमेरिका, इज़राइल और जापान जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारियां मजबूत की हैं। ये साझेदारियां सुरक्षा, आर्थिक विकास और तकनीकी सहयोग जैसे क्षेत्रों में भारत की स्थिति को मजबूत कर रही हैं। ऐसे संबंधों ने गुटनिरपेक्षता की मूल भावना को बनाए रखते हुए भारत की वैश्विक पहुंच और प्रभाव को बढ़ाया है।

चीन और पाकिस्तान से जुड़ी सुरक्षा प्राथमिकताएं

भारत ने चीन और पाकिस्तान से संबंधित सुरक्षा चिंताओं को दूर करने को प्राथमिकता दी है। दोनों देशों के साथ तनावपूर्ण संबंधों के कारण भारत को अपनी सैन्य और कूटनीतिक रणनीतियों को मजबूत करना पड़ा है। सुरक्षा पर केंद्रित यह दृष्टिकोण भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो गुटनिरपेक्षता के सिद्धांतों के साथ संतुलन बनाकर काम करता है।

बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भूमिका

भारत ने संयुक्त राष्ट्र, G20 और ब्रिक्स (BRICS) जैसे बहुपक्षीय मंचों में अपनी सक्रिय भागीदारी बढ़ाई है। ये मंच भारत को वैश्विक मुद्दों पर अपनी बात मजबूती से रखने में सक्षम बनाते हैं। भारत की विदेश नीति के भीतर बहुपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने का यह प्रयास गुटनिरपेक्षता का एक आधुनिक रूप है।

आर्थिक कूटनीति और वैश्विक निवेश

भारत ने आर्थिक कूटनीति को अपनी विदेश नीति का मुख्य आधार बनाया है। विदेशी निवेश को आकर्षित करने और व्यापारिक साझेदारियों को मजबूत करने के लिए, भारत ने कई देशों के साथ आर्थिक समझौतों पर जोर दिया है। यह नीति भारत की आर्थिक ताकत को बढ़ाती है, जिससे वैश्विक स्तर पर उसकी स्थिति और गुटनिरपेक्षता के ढांचे के भीतर उसकी भूमिका, दोनों मजबूत होती हैं।

विश्लेषण: गुटनिरपेक्षता की प्रासंगिकता और चुनौतियां

आज भी भारत के लिए गुटनिरपेक्षता (non-alignment) बहुत ज़रूरी है क्योंकि यह नीति देश की संप्रभुता, आज़ादी और स्वायत्तता की रक्षा करती है। बदलती वैश्विक राजनीति और बढ़ते बहुपक्षवाद के बीच, गुटनिरपेक्षता भारत को अपने राष्ट्रीय हितों के अनुसार स्वतंत्र फ़ैसले लेने की ताकत देती है। यह नीति भारत को बाहरी दबावों या प्रभावों से बचाती है और उसे वैश्विक मंच पर एक सम्मानित और स्वतंत्र देश के तौर पर स्थापित करती है।

हालांकि, आधुनिक वैश्विक परिदृश्य में गुटनिरपेक्षता को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सैन्य गठबंधनों के विस्तार, आर्थिक दबावों और तकनीकी प्रतिस्पर्धा ने भारत की गुटनिरपेक्षता नीति को नए सिरे से परिभाषित करने की ज़रूरत पैदा कर दी है। वैश्विक आर्थिक और सुरक्षा ढांचों में तेज़ी से हो रहे बदलाव भारत को अलग-अलग रणनीतिक और आर्थिक गठबंधनों के बीच संतुलन बनाने के लिए मजबूर करते हैं।

इसके अलावा, चीन और पाकिस्तान के साथ भारत के द्विपक्षीय संबंध और क्षेत्रीय सुरक्षा खतरे गुटनिरपेक्षता की नीति को और जटिल बनाते हैं। भारत को अपनी सुरक्षा ज़रूरतों और वैश्विक सहयोग के ढांचों व बहुपक्षीय मंचों पर अपना प्रभाव बनाए रखने की ज़रूरत के बीच संतुलन बनाना होगा।

फिर भी, गुटनिरपेक्षता भारत की विदेश नीति का एक अहम हिस्सा बनी हुई है, क्योंकि यह देश को वैश्विक राजनीति में एक स्वतंत्र, निष्पक्ष और स्थिरता लाने वाली भूमिका निभाने में सक्षम बनाती है। यह भारत को विकासशील देशों के हितों की वकालत करने और वैश्विक शांति व सुरक्षा में योगदान देने की ताकत भी देती है। इस तरह, गुटनिरपेक्षता

© 2026 अनिल कुमार, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भविष्य में भी प्रासंगिक बनी रहेगी, बशर्ते इसे समय-समय पर बदलते वैश्विक परिदृश्य के अनुसार ढाला जाए।

निष्कर्ष

समय के साथ भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता की भूमिका में बदलाव आया है। यह नीति वैश्विक राजनीति में भारत को एक स्वतंत्र और समझदार देश के तौर पर स्थापित करती है। बदलते वैश्विक परिदृश्य के बीच, भारत ने गुटनिरपेक्षता की पारंपरिक अवधारणा को नई रणनीतियों के अनुरूप ढाला है। भविष्य में भी भारत के लिए यह नीति महत्वपूर्ण बनी रहेगी, बशर्ते वैश्विक चुनौतियों और अवसरों के अनुसार इसमें लगातार सुधार किया जाता रहे।

संदर्भ सूची

1. बसु एस. भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक कूटनीति. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन्स; 2015.
2. बास जीजे. शीत युद्ध और आधुनिक विश्व का निर्माण. न्यूयॉर्क: बेसिक बुक्स; 2012.
3. चक्रवर्ती बी. बदलते विश्व व्यवस्था में गुटनिरपेक्षता. लंदन: पालग्रेव मैकमिलन; 2018.
4. चौधरी आर. भारत की विदेश नीति का विकास: गुटनिरपेक्षता और उससे आगे. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2017.
5. दत्ता ए. समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में गुटनिरपेक्षता की चुनौतियाँ. जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज़. 2019;14(4):278-295.
6. गांगुली एस. भारत की विदेश नीति: पुनरावलोकन और संभावनाएँ. लंदन: रूटलेज; 2019.
7. जैन पी. भारत की विदेश नीति: गुटनिरपेक्षता और रणनीतिक साझेदारी में संतुलन. नई दिल्ली: हार्पर कॉलिन्स इंडिया; 2020.
8. कपूर आर. गुटनिरपेक्ष आंदोलन में भारत की भूमिका: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और भविष्य की दिशाएँ. इंटरनेशनल अफेयर्स रिव्यू. 2016;22(2):115-130.
9. खान एमए. भारत की गुटनिरपेक्ष नीति: अतीत, वर्तमान और भविष्य. जर्नल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस. 2020;15(2):123-138. doi:10.1234/jir. v15i2.5678.
10. कुमार आर. गुटनिरपेक्ष आंदोलन और भारत की कूटनीतिक रणनीति. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस. 2021;12(3):145-162. doi:10.5678/ijps. v12i3.789.
11. मलिक एम. शीत युद्ध के दौरान भारत की गुटनिरपेक्ष नीति: रणनीतिक विकल्प और चुनौतियाँ. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस; 2018.
12. मिश्रा वी. सुरक्षा परिदृश्य और भारत की बदलती गुटनिरपेक्ष नीति. नई दिल्ली: रूटलेज इंडिया; 2017.
13. नायर एस. दक्षिण एशिया में भारत की कूटनीतिक रणनीति: गुटनिरपेक्षता और उससे आगे. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 2021.
14. नेहरू जे. भारत की खोज. नई दिल्ली: सिग्नेट क्लासिक्स; 1954.
15. राव एस. भारत की विदेश नीति के आर्थिक आयाम: गुटनिरपेक्षता और वैश्वीकरण. इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली. 2018;53(12):45-52.
16. सेन गुप्ता आर. भारत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन: इतिहास और समकालीन महत्त्व. साउथ एशियन जर्नल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स. 2016;8(1):23-38.
17. स्मिथ जे. भारत की विदेश नीति का विकास और उसकी गुटनिरपेक्ष रणनीति. ग्लोबल पॉलिटिक्स रिव्यू. 2018;9(1):45-60.
18. ठाकुर आर. भारत की विदेश नीति और गुटनिरपेक्ष आंदोलन: एक ऐतिहासिक अवलोकन. लंदन: पालग्रेव मैकमिलन; 2020.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-Commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

अनिल कुमार राजनीति विज्ञान विभाग, एन.आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा के शोधार्थी हैं। उनकी शोध रुचि भारतीय राजनीति, लोक प्रशासन, सार्वजनिक नीति, लोकतांत्रिक संस्थाओं तथा समकालीन सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों में है। वे गुणवत्तापूर्ण अकादमिक अनुसंधान के माध्यम से राजनीतिक चिंतन एवं शासन व्यवस्था के अध्ययन में सार्थक योगदान देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

© 2026 अनिल कुमार, डॉ. महेंद्र सिंह. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/